# देश के 60 मिलियन मैट्रिक टन वेस्ट को मैनेज करने की कोशिशें नाकाफ़ी

## पर्यावरण संरक्षण व्याख्यानमाला में डॉ. अमिय कुमार साहू का संबोधन

- देश में हर साल निकलता है 60 मिलियन मैट्रिक टन कचरा
- सरकार वेस्ट टू एनर्जी कॉरपोरेशन बनाए तो तैयार हो सकती है बिजली

डॉ. अमिय कुमार साहू

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

इंदौर प्लास्टिक से बायोडीजल बनाया जा सकता है। दिल्ली में एक संयंत्र लगाया गया,लेकिन पॉलीथिंस के अभाव में इसे बंद करना पड़ा। आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि माफिया की नज़र कचरे के धंधे तक पर है। वह गली में पॉलीथिन बीनने वाली महिलाओं से लेकर इस कचरे को रीसायकल करने तक में लिप्त है। सरकार को इस पर ध्यान देना होगा क्योंकि पूरे भारत में कचरे का कारोबार 50 हजार करोड़ रुपए का है। 60 मिलियन मैट्रिक टन कचरा हर साल निकलता है। सरकार को वेस्ट टु एनर्जी कॉर्पोरेशन बनाना चाहिए ताकि इस कचरे से बिजली तैयार की जा सके। पर्यावरण संरक्षण व्याख्यानमाला के अंतिम दिन यह बात मुंबई के डॉ अमिय कुमार साहू ने कही।

### वेस्ट मैनेजमेंट पर सिर्फ फैंसी काम हो रहा

उन्होंने कहा कि पूरे भारत में कचरा प्रबंधन पर सिर्फ फैंसी काम हो रहा है। दावा तो कचरे से खाद बनाने का है, लेकिन बड़ा सवाल है कि इसे खरीदता कौन है। ऊटी में तो खाद का पहाड़ बन गया है। कोई किसान इसे खरीदने आगे नहीं आ रहा। क्योंकि इस खाद में एनपीके यानी नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम वैल्यू नहीं है। इसलिए यह फर्टिलाइज़र नहीं हो सकती। कचरा प्रबंधन आईएएस अधिकारियों के बस की बात नहीं है। इंजीनियर ही इसका सही निपटान कर सकेंगे। सरकार को इसे समझना होगा। देश को पाउच कल्चर ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। गुटखे और पानी जैसे प्रोडक्ट ने समस्या को विकट बना दिया है। इस पर लगाम लगाना ज़रूरी है।

### इज़राएल का वेस्ट मैनेजमेंट सबसे अच्छा

पूरी दुनिया में इज़राएल का वेस्ट मैनेजमेंट सबसे बेहतर है। वहां खाद बनाने से पहले कचरे से मीथेन गैस निकालते हैं। फिर इस गैस को इंडस्ट्रीज़ को सप्लाय किया जाता है। गैस निकालने के बाद जो खाद बनती है उसमें अधिक उर्वरकता होती है। यही तरीका हमें भी अपनाना होगा।

### स्मार्ट सिटी की बात बेमानी

स्मार्ट सिटी का सपना तब तक संभव नहीं जब तक पर्यावरण को सुधारा न जा सके। दूषित पानी, जहरीली हवा और गंदगी से पटी जमीन पर सिर्फ नई बिल्डिंग और सड़क निर्माण कर सिटी को स्मार्ट नहीं बनाया जा सकता। देश में फैक्ट्री, हॉस्पिटल से निकले कचरे और ई-वेस्ट को लेकर अब भी सही मैनेजमेंट का अभाव है।

## पर्यावरण संरक्षण व्याख्यानमाला के समापन पर डॉ. साहू ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर दी जानकारी, कहा-

# झाड़ू लगाने से 50 साल में स्वच्छ होगा देश

**इंदौर। नई दुनिया प्रतिनिधि**

सॉलिड वेस्ट को डिस्पोज करने के लिए देश में एक भी इंसिलेटर नहीं है। विदेशों में सॉलिड वेस्ट से बिजली तक बनाई जा रही है। हमें भी इसके लिए कदम उठाना होगा। पानी, कोयले से बिजली बनाने के लिए बोर्ड बनाया गया है। वैसे ही सॉलिड वेस्ट से बिजली बनाने वेस्ट टू पॉवर कार्पोरेशन बनाने कि जरूरत है। झाड़ू लगाकर देश को स्वच्छ बनाने में 50 साल का समय लगेगा।

डॉ. अमियकुमार

यह बात प्रीतमलाल दुआ सभागृह में इंडस इंस्टीट्यूट ऑफ स्पेशल स्टडीज गुजरात के संस्थापक डॉ. अमियकुमार साहू ने कही। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण व्याख्यानमाला के अंतिम दिन ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर जानकारी दी। डॉ. साहू ने बताया कि सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के लिए भारत में कोई कोर्स नहीं है, जबकि विदेशों में इसके लिए अलग से कोर्स चलाए जा रहे हैं। मैं वर्ल्ड बैंक के सहयोग से 1995 में बांग्लादेश गया था, जहां इसे लेकर काम किया। जब भारत आया तो यहां काम प्रारंभ किया गया। 22 साल से इस पर काम हो रहा है। योजनाएं बनाई जा रही हैं पर इससे भी जरूरी है लोगों को जागरूक कर नई तकनीक का प्रयोग करना। हमें अपने स्वभाव को बदलना होगा। गीला व सूखा कचरा अलग करने का जो प्रयोग किया जा रहा है उसके साथ ही तीसरी प्रोसेस भी अपनाना होगी, जिसमें घरों से निकलने वाले केमिकल वेस्ट, दवाइयों को भी डिस्पोज करने की व्यवस्था करना होगी। गीले कचरे में 24 घंटे में बैक्टीरिया होने लगते हैं इसे घर में रखने के बजाय कंपोज करना बेहतर होगा। वीके जैन, पीएल नैने, आरके श्रीवास्तव, आरके भार्गव, संदीप नारूलकर, विभा मिश्रा, रवि तिवारी व अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

प्रीतमलाल दुआ सभागृह में व्याख्यानमाला के अंतिम दिन बुधवार को कई लोग मौजूद थे।

### किसानों को कंपोज के प्रति करना होगा जागरूक

डॉ. साहू ने कहा कि आज भारत में कंपोज बनाने में लोग व कंपनियां जागरूक हुई हैं। इसके बाद भी किसान इसे खरीद नहीं रहे। इन कंपोज में नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटेशियम को संतुलित मात्रा में मिलाकर किसानों को इसका उपयोग बताना जरूरी है। वक्ता गौरव गुप्ता ने बताया कि सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट पर हमारी संस्था काम कर ही है। लोगों से घरों में जाकर गीला कचरा लिया जाता है व इससे कंपोस्ट बनाई जा रही है। यह काम हमने 84 फीसदी किया है। अगले प्रोजेक्ट में इसे 100 फीसदी किया जाएगा। सॉलिड वेस्ट समस्या को शहर के युवा समझ रहे हैं। इस पर काम भी किया जा रहा है। हमारे यहां प्लास्टिक वेस्ट को सड़क बनाने में यूज किया जा रहा है। यह एक बेहतर काम है। डॉ. अनिल भंडारी ने बताया हमें वर्मी कंपोज्ड बनाने की जरूरत है। कॉलोनी या अपार्टमेंट में इसे बनाने से सरकार का पैसा बचाया जा सकता है। पूरे शहर से इसे इकट्ठा करने में लाखों रुपए खर्च होते हैं। नए साधनों को अपनाकर इसे आसान किया जा सकता है। मुख्य अतिथि प्रीतमलाल दुआ ने कहा इंदौर का विकास हो यह हर किसी को समझना होगा। नागरिक जागरूक होंगे तो इस काम में सफलता मिलेगी।

# बिहार से आए दल ने कहा- पटना में भी लाना होगी इंदौर जैसी जनजागरुकता

**इंदौर।** पटना नगर निगम के दल ने बुधवार को भी शहर में सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। लोगों द्वारा दिए जाने वाले गीले और सूखे कचरे को देखकर उन्होंने आश्चर्य जताया। उन्होंने स्थानीय अफसरों से कहा कि यह बहुत बड़ी बात है कि जनता इतनी जागरूक है कि गीला और सूखा कचरा अलग करके दे रही है। इंदौर के लोग रिस्पांसिबल हैं। यहां जैसी जनजागरुकता पटना में भी लाना होगी। इंदौर नगर निगम के अधिकारियों ने सुबह मेहमान अफसरों को नेहरू नगर और नंदानगर क्षेत्र में डोर टू डोर कचरा कलेक्शन दिखाया। इसके बाद वे बायपास स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड गए जहां उन्होंने कचरे से कंपोस्ट बनाने का प्लांट देखा। ट्रेंचिंग ग्राउंड के मटेरियल रिकवरी सेंटर में कचरे को अलग-अलग करने का काम दिखाया गया। यहां से पटना का दल नेहरू पार्क स्थित स्मार्ट सिटी ऑफिस गया जहां उन्होंने नगर निगम द्वारा सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट और स्वच्छता सर्वेक्षण 2018 को लेकर किए जा रहे डॉक्युमेंटेशन को समझा।

बिहार से आए पटना नगर निगम के दल ने समझी इंदौर की सफाई व्यवस्था की बारीकियां।

निगम की सहयोगी एनजीओ संस्था बेसिक्स के श्रीगोपाल जगताप ने बताया कि पटना के अधिकारी इंदौर के लोगों की जागरुकता से बेहद प्रभावित हैं। उन्होंने माना है कि जिस तरह इंदौर में योजना बनाई गई है, उसी तरह जनजागरुकता लाना होगी। इससे पहले मंगलवार उन्होंने रेडिसन चौराहे के आसपास रात्रिकालीन सफाई देखी और इसमें इस्तेमाल मशीनों की तारीफ की। मेहमान अफसर सराफा और राजवाड़ा क्षेत्र में भी घूमे और वहां की सफाई व्यवस्था देखी। पटना में ज्यादातर सड़कें संकरी और सघन हैं इसलिए उन्होंने राजवाड़ा क्षेत्र की सफाई खासतौर पर समझी।

व्याख्यानमाला...

# बॉयोएनर्जी प्लांट ही कचरा निपटान का अच्छा उपाय

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

**इंदौर.** कचरे से खाद बनाना एकमात्र उपाय नहीं है। सूखे कचरे की अधिकतर चीजें रिसाइकिल हो जाती हैं, लेकिन इसे लेकर सरकार की नीति ठीक नहीं है। बॉयोएनर्जी प्लांट ही कचरे के निपटान का सबसे अच्छा उपाय है। दुनिया में कहीं भी निजी कंपनी इंसिनेटर नहीं चलाती है। इंसिनेटर से कचरे से ऊर्जा बनाना चाहिए। यूरोप में इसे इंसिनेटर नहीं, पॉवर प्लांट कहा जाता है। इन्हें बिजली उत्पादन में लगाना चाहिए। ये काम सिर्फ शासन ही कर सकेगा। फिलहाल देश के ऊर्जा मंत्री इस विषय में काम कर रहे है। वेस्ट टू एनर्जी से ही कचरे का ठीक प्रबंधन हो सकता है।

यह बातें मुंबई से आए अमियकुमार साहू ने गुरुवार को सीईपीआरडी द्वारा आयोजित अष्टम व्याख्यानमाला के अंतिम दिन कही। उन्होंने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर कहा, गीला और सूखा कचरा अलग करने से ही पर्यावरण की बहुत सी समस्याएं खत्म हो जाएंगी। लोगों में इसे लेकर जागरूकता नहीं आती, तब तक इसका फायदा नहीं मिलेगा। घरों में दो डस्टबिन होना चाहिए। गीले कचरे को 24 घंटे से ज्यादा नहीं रखना चाहिए। रासायनिक कचरे के लिए भी एक अलग डस्टबिन होना चाहिए। इसमें दवा, क्लीनर सहित अन्य जहरीली वस्तुएं डालना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजसेवी प्रीतमलाल दुआ ने की।

व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए अमियकुमार साहू।

## हर सप्ताह प्रोसेस कर रहे 10 टन कचरा

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में शहर के एंटरप्रेन्योर गौरव गुप्ता ने बताया, 1980 तक इंदौर से ठोस प्रबंधन को लेकर काम हुआ था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इस ओर ध्यान नही दिया गया। अब फिर इसकी शुरुआत इंदौर से हो रही है। हमने एक मोबाइल कम्पोस्टिंग यूनिट बनाई है, जिसमें 10 टन हर सप्ताह प्रोसेस किया जाता है।